Navchetana Homilies

April 21, 2019

Is 60:1-7

1 Sam 2:1-10

Rom 6:1-14

Mt 28:1-6

पुनःरूत्थान का पर्व

यही है वह दिन जिसके द्वारा मानव जाति को प्रत्याशा मिली। यही है वह दिन जिसके द्वारा मानव जाति को जीने का अर्थ मिला। यही है वह दिन जिसने निराशा को आशा के रुप में बदला, दु;ख को खुशी के रुप में। यही है वह दिन जिसने मृत्यु को भी पराजय किया। यही है पास्का पर्व, पुर्नरुत्थान पर्व, आओ हम सब मिलकर खुशी मनायेंगे। जी हाँ प्रिय भाईयों तथा बहनों आप सभी को पास्का पर्व की ढेर सारी शुभकामनायें।

आज सारा संसार यही हर्शोल्लास से प्रभु येसु के पुर्नरुत्थान का पर्व मना रहा है। इसी दिन हमारे प्रभु ने मृत्यु पर विजय पायी है। एक मनुष्य की भांति मरकर, येसु ने यह साबित कर दिया, कि वे एक साधारण मनुष्य थे। तथा पुर्नजीवित होकर उन्होने यह भी साबित किया वे ईश्वर हैं।

येसु की मृत्यु अन्यों की मृत्यु से भिन्न है। मृत्यु येसु पर विजय न पा सकी। उन्होंने मृत्यु पर विजय पायी और मृतकों में से जी उठे। ख्रीस्तीयों के विश्वास का आधार यही है और उनका संपूर्ण विश्वास इसी पर केन्द्रित है। इसीलिए संत पौलुस कहते हैं– "यदि मसीह नहीं जी उठे तो हमारा धर्म प्रचार व्यर्थ है और आप लोगों का विश्वास भी व्यर्थ है।"

ख्रीस्तीय इतिहास के पन्ने पलटकर देखें तो पता चलता है कि शुरु से लेकर अभी तक उसे सर्वनाश करने के लिए कई लोगों ने प्रयास किया, लेकिन कोई भी इस पर हावी नहीं हो पाया। एक बार रोमन सम्राट नीरो ने नशे मे धुत होकर अपने गिलास को पटककर कहा– "मै गिलास के इन टुकड़ो की भांति ख्रीस्तीय धर्म का सर्वनाश कर दूंगा।" और उसने बड़ी क्रुरता से ख्रीस्तीयो को सताया। आज भी कुछ लोग दुनिया के भिन्न–भिन्न जगहो पर ख्रीस्तीयों को सताते हैं, और बड़ी क्रुरता से नष्ट करने कि कोशिष करते हैं। सुनने को मिला है कि लिबीया समुद्र तट पर कुछ इस्लाम आंतकवादियो ने 21 ईसाईयों का गला काटकर मार डाला। हाँ मित्रो जितना ज्यादा सताते हैं उतना ज्यादा ख्रीस्तीय धर्म बढते जा रहा है। इसका क्या अर्थ है ? इसका अर्थ यह है कि इसकी नींव उस महान पत्थर पर रखी गयी है जिसने मृत्यु को भी पराजय कर उसपर विजय पाई है। संत तरतुलिनियन कहते हैं Church

is built on Martyrs blood . **शहीदो के खून पर ही कलिसिया बनी हुई है।**

प्रिय मित्रो, इंसान को अपने जीवन को अर्थ प्रदान करने के लिए तीन कार्य करने हैं – सबसे पहले हमे प्यार करने के लिए कोई होना है। दूसरा सोचने के लिए कुछ होना और तीसरा कार्य करने के लिए कुछ जगह होना। हमारी जिंदगी के सबसे बड़ी समस्या यह है कि हमें इन तीनो कार्यो के लिए याने हमारे पास प्यार करने, सोचने और कार्य करने के लिए कुछ भी नहीं है। पुर्नरुत्थान हमारे लिए यही आह्वान देता है कि हमारा जीवन आशा, प्रत्याशा से भरा होना अनिवार्य है। इस दुनिया मे हमारा जीवन क्षणभंगूर है। हमें इस क्षणभंगूर जीवन को ऐसे एक स्वप्न के साथ मिलकर जीना है जो हमें अनंत जीवन प्रदान करे।

एक ईसाई मृत्यु पर डरने, या दुःखी होने के लिए नहीं बल्कि वह एक उत्सव का, खुशी का कारण है, क्योंकि हमसे कोई भी ना तो अपने लिए जीता है और ना अपने लिए मरता है। यदि हम जीते हैं तो प्रभु के लिए जीते हैं और मरते है तो प्रभु के लिए मरते है। इस प्रकार हम चाहे जीते रहे या मर जाए हम प्रभु के ही हैं। (रोमन 14 ; 7–9)

हम कैसे कह सकते हैं कि पुर्नजीवित प्रभु हमारे बीच मे उपस्थित है? यदि हम अपने स्वार्थ को बाहर निकाल फेंकने

की ठान लेते हैं और सच्चाई, न्याय, मानवता, प्रेम आदि के द्वारा इस संसार मे सच्ची मानवता को ला सकें। तो हम कह सकते हैं कि पुर्नजीवित प्रभु हमारे बीच उपस्थित है। जब हम प्रभु के बताये मार्ग पर चलकर उनके बताये कार्यो को करते रहेंगे, तभी हम एक दूसरे को पास्का पर्व की शुभकामनायें और मुबारकबाद देने के हकदार होंगे।

प्रत्याशा का त्यौहार मनाते इस अवसर पर मन मे एक घटना याद आ रही है। घटना 2003 की है। गुजरात के भूंकप के बाद 7 दिनों तक एक लड़की सीमेंट–पत्थरो के नीचे दबी हुई थी। 7 दिनो के बाद ही लोगों ने उस लड़की को बचा पाये। मृत्यु को पार करते हुए जब वह लड़की बाहर आई तो सभी मीडिया वालों ने एक ही प्रश्न पूछा – बिना भोजन–पानी या पर्याप्त मात्रा में ऑक्सीजन नहीं था तो आप इतने दिनों तक कैसे जीवित रही? उत्तर में लड़की ने कहा कि भूंकप आने पर एक ही क्षण में सबकुछ खतम हो गया। बड़े–बड़े मकान गिर गये। बचने के लिए, दौडने के लिए सोचा तो पता चला कि मैं भी फंस चुकि हूँ। मुझे मुड़ने तक को जगह नहीं थी। मैंने मृत्यु को अपनी आँखो से देखा तो ईश्वर को पुकारने के अलावा मेरे पास और कोई उपाय ही नहीं था। किसने बोला ईश्वर नहीं है? सीमेंट–पत्थर के बीच में से ईश्वर ने मेरे लिए सूर्य की किरण भेजी। दिन के समय उस छोटे द्वार से मैं ऊपर देखकर चिल्लाती थी, मेरा विश्वास था कि मेरी आवाज

सुनकर कोई तो मुझे बचाने के लिए आयेगा। सूर्य कि किरणों को मेरे जीवन की ओर भेजने वाली उस प्रत्याशा का नाम है ईश्वर।

जी हाँ प्रिय मित्रों आज पास्का पर्व भी ऐसे प्रत्याशा के रुप का तोहफा हमको प्रदान करता है, जब कभी हमारे जीवन मे संघर्ष की स्थिति हो, हमें बहुत कठिनाईयों को सहन करना पड़ रहा हो, तो डरिये नहीं बल प्रदान करने के लिए ये संघर्ष, और सहनशक्ति हमारी रक्षा के लिए है। भला सोचकर सभी संघर्षों को सहन करने वालो के लिए ईश्वर हमें एक तोहफा प्रदान करते हैं जिसका नाम है 'Easter' 'पास्का पर्व'।

Fr. Sabu Puthenpurackal